This question paper contains 8+4 printed pages]

872

M.A. (Final) Examination, 2018

SANSKRIT

(संस्कृत)

UOKonline.com

Paper IV

(निबंध व्याकरण एवं अनुवाद)

(सभी वर्गों के लिए अनिवार्य)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 100

नोट :—20 प्रतिशत अंक संस्कृत माध्यम से उत्तर प्रस्तुत करने हेतु निर्धारित हैं।

इस प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड इस प्रकार हैं ;

खण्ड 'अ' *अधिकतम अंक-10*

*इस खण्ड में एक अनिवार्य प्रश्न है जिसमें **10** लघु प्रश्न हैं। प्रत्येक लघु प्रश्न का उत्तर **20** शब्दों से अधिक न हो। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड 'ब' *अधिकतम अंक-50*

*इस खण्ड में **10** प्रश्न हैं। प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न का चयन करते हुए, कुल **5** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **250** शब्दों से अधिक न हो। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।*

UOKonline.com

खण्ड 'स' *अधिकतम अंक-40*

*इस खण्ड में प्रश्न संख्या **12** करना अनिवार्य है । यह हिन्दी अथवा संस्कृत व्याख्या से संबद्ध है । छात्रों को प्रश्न संख्या **13, 14. 15** में से कोई **एक** प्रश्न करना होगा । कुल **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **500** शब्दों से अधिक न हो। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-अ

1. अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×1=10

   (*i*) उपसर्गपूर्वक आकारान्त धातु से 'क' प्रत्यय कौनसे सूत्र से होता है ?

   (*ii*) कर्म उपपद होने पर धातु से कौनसा प्रत्यय होता है ?

   (*iii*) "क्तक्तवत् निष्ठा" सूत्र का अर्थ लिखिये।

   (*iv*) "भावे" सूत्र का अर्थ लिखिये।

   (*v*) नपुंसकलिङ्ग भाव में धातु से 'क्त' प्रत्यय किस सूत्र से होता है ?

(vi) 'सचक्रम्' में समास विधायक सूत्र का नाम लिखिये।

(vii) 'अक्षशौण्ड:' का लौकिक समास विग्रह नाम सहित लिखिए।

(viii) तद्धित परे रहते उवर्णान्त भसंज्ञक के स्थान पर गुण आदेश किस सूत्र से होता है ?

(ix) "गर्गादिभ्यो यञ्" सूत्र का अर्थ लिखिये।

(x) "पालकान्तान्न" सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

खण्ड-ब

इकाई-I

2. अधोलिखित किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या तथा किन्हीं दो पदों की सूत्रनिर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए :

(अ) (i) युवोरनाकौ

(ii) कर्मण्यम्

(iii) आत्ममाने खश्च

(iv) रदाभ्यांनिष्ठातो न: पूर्वस्य च द: 2½×2=5

(ब) (i) लवण:

(ii) गोद:

(iii) प्रियंवद:

(iv) राजकृत्वा 2½×2=5

3. अधोलिखित किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या तथा किन्हीं दो पदों की सूत्रनिर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए :

(अ) (i) आने मुक्

(ii) राल्लोप:

(iii) ष: प्रत्ययस्य

(iv) गेहे क: 2½×2=5

(ब) (i) भिन्न:

(ii) जीन:

(iii) विद्वान्

(iv) चिकीर्षु: 2½×2=5

https://pyqlelp.com

इकाई-II

4. अधोलिखित किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या तथा किन्हीं दो पदों की सूत्रनिर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए :

(अ) (*i*) धञि च भावकरणयोः

(*ii*) स्त्रियां क्तिन्

(*iii*) गुरोश्च हलः

(*iv*) हलश्च 2½×2=5

(ब) (*i*) पाकः

(*ii*) करः

(*iii*) यज्ञः

(*iv*) सम्पत्तिः 2½×2=5

5. अधोलिखित किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या तथा किन्हीं दो पदों की सूत्रनिर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए :

(अ) (*i*) समानकर्तृकयोः पूर्वकाले

(*ii*) नित्यवीप्सयोः

(*iii*) उदितो वा

(*iv*) न क्त्वा सेट 2½×2=5

(ब) (*i*) जूः

(*ii*) पुत्रकाम्या

(*iii*) रामः

(*iv*) प्रकृत्य 2½×2=5

इकाई-III

6. निम्नलिखित किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या तथा किन्हीं दो पदों की सूत्रनिर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए :

(अ) (*i*) तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्

(*ii*) नदीभिश्च

(*iii*) पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः

(*iv*) तद्धितेष्वचामादेः 2½×2=5

(ब) (*i*) हरिहरौ

(*ii*) गवाक्षः

(*iii*) पीताम्बरो हरिः

(*iv*) अन्तर्लोम 2½×2=5

https://pyqlelo.com

7. निम्नलिखित किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या तथा किन्हीं दो पदों की सूत्रनिर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए :

(अ) (*i*) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्

(*ii*) कुगतिप्रादयः

(*iii*) उद्भिभ्यां काकुदस्य

(*iv*) द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् 2½×2=5

(ब) (*i*) सुराजा

(*ii*) प्राचार्यः

(*iii*) राजपुरुषः

(*iv*) द्वियमुनम् 2½×2=5

इकाई-IV

8. अधोलिखित किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या तथा किन्हीं दो पदों की सूत्रनिर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए :

(अ) (*i*) अश्वपत्यादिभ्यश्च

(*ii*) अत इञ्

(*iii*) स्त्रीभ्यो ढक्

(*iv*) ठस्येकः 2½×2=5

(ब) (*i*) वैनतेयः

(*ii*) राजन्यः

(*iii*) पञ्चालः

(*iv*) कौरव्यः 2½×2=5

9. अधोलिखित किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या तथा किन्हीं दो पदों की सूत्रनिर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए :

(अ) (*i*) संस्कृतं भक्षाः

(*ii*) भिक्षादिभ्योऽण्

(*iii*) तस्य निवासः

(*iv*) शिखाया वलच् 2½×2=5

(ब) (*i*) सोमात्

(*ii*) निवासः

(*iii*) जनपदे

(*iv*) शिखावलम् 2½×2=5

इकाई-V

10. निम्नलिखित किन्हीं **दो** पदों की सूत्र निर्देशपूर्वक सिद्धि तथा किन्हीं **दो** सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए :

(अ) (*i*) उगित :

(*ii*) तरुण

(*iii*) सुन्दरी

(*iv*) इन्द्राणी 2½×2=5

(ब) (*i*) यज्ञश्च

(*ii*) वयंसि प्रथमे

(*iii*) यवाद् दोषे

(*iv*) सूर्याद् देवतायां चाष्वाच्य: 2½×2=5

11. निम्नलिखित किन्हीं **दो** पदों की सूत्र निर्देशपूर्वक सिद्धि तथा किन्हीं **दो** सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए :

(अ) (*i*) उपध्यायी

(*ii*) दाक्षी

(*iii*) ब्राह्मणी

(*iv*) गोपालिका 2½×2=5

UOKonline.com

(ब) (*i*) मत्स्यस्य ङ्याम्

(*ii*) यूनस्ति:

(*iii*) इतो मनुष्यजाते:

(*iv*) पुंयोगादाख्यायाम् 2½×2=5

खण्ड-स

12. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए : 20

(*i*) वेदानां महत्त्वम्

(*ii*) षडङ्गानि वेदा:

(*iii*) भारतीय-दर्शनानि

(*iv*) भारतीय-दर्शनेषु मोक्षस्य स्वरूपम्

(*v*) विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

(*vi*) काव्यस्यात्मा ध्वनि:

(*vii*) भारवेरर्थगौरवम्

(*viii*) योगः कर्मसु कौशलम्

(*ix*) राजस्थानस्य आधुनिक संस्कृत साहित्यकाराः

(*x*) संस्कृत वाङ्मये विश्वबन्धुत्वम्

13. निम्नलिखित हिन्दी गद्यावतरण का संस्कृत में तथा संस्कृत पद्य का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

(अ) समय परिवर्तनशील है। जो आज जन्म लेता है, वह कालक्रम से बालक, युवक और वृद्ध होकर मृत्यु की ओर बढ़ता है। समय तो अबाध गति से बीतता जाता है। वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है। जो लोग उसके महत्त्व को समझकर उसका सदुपयोग करते हैं, वे बुद्धिमान हैं। उन्हीं को महान उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। जो समय को नष्ट करते हैं वे पछताते हैं। वे जीवन में श्रेय को प्राप्त नहीं कर सकते। 10

(ब) कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः

शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः

यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नान पुण्योदकेषु

स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥ 10

14. निम्नलिखित गद्यावतरण का संस्कृत में तथा संस्कृत का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

(अ) विश्व व्यवस्था का मूल यज्ञ है। यज्ञ का अर्थ है– आदान-प्रदान। इस आदान-प्रदान से जो अपूर्वभाव उत्पन्न होता है उसे यज्ञ कहते हैं। अग्नि में सोम की आहुति दी जाती है, यह प्रदान है। अग्नि सोम को ग्रहण करता है, वह आदान है। अग्नि में सोम आहुति का यज्ञ सर्वत्र चल रहा है इसलिए सम्पूर्ण विश्व यज्ञ है। प्रकृति के इस यज्ञ के स्वरूप में हस्तक्षेप करने पर संपूर्ण व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है और यह अस्तव्यस्तता ही पर्यावरण प्रदूषण का कारण है। इसलिए प्रकृति के नियमों का मन, वाणी और कर्म से पालन ही हमारा पुनीत कर्तव्य है। 10

(ब) मानवः सामाजिकः प्राणी अस्ति। समाजे असौ यादृशैः सह उपविशति, तादृशः एव असौ भवति। गुणवतां सङ्गेन गुणवान भवति, दुष्टानां सङ्गत्या दुष्टः भवति। अतः एतत् स्पष्टं यत् दोषगुणाः संसर्गजाः भवन्ति। सतां सङ्गतिः मानवस्य बुद्धिः प्रखरां करोति। ईदृशः मानवः सदैव परेषाम् हितं चिन्तयति। सत्सङ्गत्या सुग्रीवः नष्टं राज्यं पत्नीं चापि प्राप्नोत्। शबरी मोक्षं प्राप्तवती। अतः अस्माभिः सदैव सत्सङ्गः करणीय सत्यमुक्तं कविना–"सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्"। 10

UOKonline.com